इकाई 15 आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य में राष्ट्रीय विचार

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

15.3 मैथिलीशरण गुप्त

15.4 जयशंकर प्रसाद

15.5 माखनलाल चतुर्वेदी

15.6 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

15.7 यशपाल

15.8 सुभद्राकुमारी चौहान

15.9 रामधारी सिंह 'दिनकर'

15.10 सारांश

15.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.12 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के तत्त्वों को जानेंगे।
- स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक सुधारों, राष्ट्रीय एकता और भाईचारे के विकास में आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य के योगदान को जानेंगे।
- नवीन साहित्यिक शैलियों के विकास में आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य के योगदान को जानेंगे।
- भारतीय समाज में परिवर्तन के साथ-साथ, विश्व साहित्य में आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य के स्थान को जानेंगे।

15.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य का उद्भव 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ। यह कालखंड सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से भरा हुआ था। ब्रिटिश शासन के प्रभाव में भारत में कई बदलाव हो रहे थे। इन बदलावों ने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। 19वीं शताब्दी का उत्तरार्ध आते-आते, भारत में राष्ट्रीय

चेतना का उदय हुआ। यह चेतना सामाजिक सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रसार और पश्चिमी विचारों के प्रभाव से प्रेरित थी। राष्ट्रीय चेतना के साथ ही, राष्ट्रीय विचारों का भी उदय हुआ।

आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य में राष्ट्रीय विचारों को प्रमुखता से व्यक्त किया गया है। विभिन्न कवियों ने अपनी रचनाओं में देशभक्ति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, और सांस्कृतिक गौरव जैसे विषयों को उठाया।

कुछ प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ एवं राष्ट्रीय विचार इस प्रकार हैं -

15.2 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (9 सितंबर 1850-6 जनवरी 1885)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिंदी साहित्य के एक अग्रणी स्तंभ थे। उन्हें "आधुनिक हिंदी साहित्य का पितामह" कहा जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे जिन्होंने कविता, नाटक, गद्य, पत्रकारिता और सामाजिक सुधारों सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

हिंदी साहित्य में योगदान

- आधुनिकता के प्रणेता: भारतेन्दु ने हिंदी साहित्य में आधुनिकता की शुरुआत की। उन्होंने रीतिकालीन साहित्य की रूढ़ियों को तोड़कर, खड़ी बोली में साहित्य रचना का मार्ग प्रशस्त किया।
- **विभिन्न विधाओं में रचना:** उन्होंने कविता, नाटक, गद्य, निबंध और पत्रकारिता सहित विभिन्न विधाओं में रचना की। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, व्यंग्य और हास्य के भाव देखने को मिलते हैं।
- **पत्रकारिता में योगदान:** उन्होंने "हरिश्चंद्र चंद्रिका", "कविवचनसुधा" और "बाला बोधिनी" जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। इन पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय रखी और जनजागरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **नाटककार और कवि:** भारतेन्दु को हिंदी नाटक का जनक माना जाता है। उन्होंने "सत्य हरिश्चंद्र", "अंधेर नगरी", "भारत दुर्दशा" जैसे अनेक प्रसिद्ध नाटक लिखे। वे एक कुशल कवि भी थे, जिन्होंने "कविवचनसुधा", "फूलों की बारी", "सत्य हरिश्चंद्र" जैसी प्रसिद्ध रचनाएं लिखीं।

सामाज सुधारक

भारतेन्दु सामाजिक सुधारों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत, दहेज प्रथा और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिंदी साहित्य और समाज को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वे एक दूरदर्शी विचारक, कुशल लेखक और सामाज सुधारक थे। उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उन्होंने अंग्रेजी शासन की आलोचना की और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया। उन्होंने राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने लोक साहित्य और कला को संरक्षण दिया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन और कृति:

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितंबर 1850 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता अंबिका प्रसाद काशी नरेश उदित नारायण सिंह के दरबार में मंत्री थे। भारतेन्दु ने संस्कृत, हिंदी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया।

उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक रचनाएं लिखीं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- कविता: कविवचनसुधा, फूलों की बारी, सत्य हरिश्चंद्र
- नाटक: सत्य हरिश्चंद्र, अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा
- गद्य: निबंध, पत्र, आलोचना
- पत्रकारिता: हरिश्चंद्र चंद्रिका, कविवचनसुधा, बाला बोधिनी

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का निधन 6 जनवरी 1885 को केवल 34 वर्ष की आयु में हो गया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य में राष्ट्रीय विचार

भारतेन्दु का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य को, और उसके साथ समाज को ब्रिटिश साम्राज्य-विरोधी दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दी। 1870 में जब कविवचनसुधा में उन्होने लॉर्ड मेयो को लक्ष्य करके 'लेवी प्राण लेवी' नामक लेख लिखा तब से हिन्दी साहित्य में एक नयी ब्रिटिश साम्राज्य-विरोधी चेतना का प्रसार आरम्भ हुआ। 6 जुलाई 1874 को कविवचनसुधा में लिखा कि जिस प्रकार अमेरिका उपनिवेशित होकर स्वतन्त्र हुआ उसी प्रकार भारत भी स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है। उन्होंने तदीय समाज की स्थापना की जिसके सदस्य स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रतिज्ञा करते थे। भारतेन्दु ने विलायती कपड़ों के बहिष्कार की अपील करते हुए स्वदेशी का जो प्रतिज्ञा पत्र 23 मार्च, 1874 के 'कविवचनसुधा' में प्रकाशित किया, वह समूचे हिंदी समाज का प्रतिज्ञा पत्र बन गया। उसमें भारतेंदु ने कहा था-

> *"हमलोग सर्वान्तर्यामी, सब स्थल में वर्तमान, सर्वद्रष्टा और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा न पहिरेंगे और जो कपड़ा कि पहिले से मोल ले चुके हैं और आज की मिती तक हमारे पास हैं उनको तो उनके जीर्ण हो जाने तक काम में लावेंगे पर नवीन मोल लेकर किसी भाँति का भी विलायती कपड़ा न पहिरेंगे, हिंदुस्तान का ही बना कपड़ा पहिरेंगे। हम आशा रखते हैं कि इसको बहुत ही क्या प्रायः सब लोग स्वीकार करेंगे और अपना नाम इस श्रेणी में होने के लिए श्रीयुत बाबू हरिश्चंद्र को अपनी मनीषा प्रकाशित करेंगे और सब देश हितैषी इस उपाय के बाद में अवश्य उद्योग करेंगे।"*

सबसे पहले भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने ही साहित्य में जन भावनाओं और आकांक्षाओं को स्वर दिया था। पहली बार साहित्य में 'जन' का समावेश भारतेन्दु ने ही किया। उनके पहले काव्य में रीतिकालीन प्रवृत्तियों का ही बोलबाला था। साहित्य पतनशील सामन्ती संस्कृति का पोषक बन गया था, पर भारतेन्दु ने साहित्य को जनता की गरीबी, पराधीनता, विदेशी शासकों के अमानवीय शोषण के चित्रण और उसके विरोध का माध्यम बना दिया। अपने नाटकों,

कविताओं, मुकरियों और प्रहसनों के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजी राज पर कटाक्ष और प्रहार किए, जिसके चलते उन्हें अंग्रेजों का कोप भाजन भी बनना पड़ा।

भारतेंदु अंग्रेजों के शोषण तंत्र को भली-भांति समझते थे। अपनी पत्रिका कविवचनसुधा में उन्होंने लिखा था –

"जब अंग्रेज विलायत से आते हैं प्रायः कैसे दरिद्र होते हैं और जब हिंदुस्तान से अपने विलायत को जाते हैं तब कुबेर बनकर जाते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि रोग और दुष्काल इन दोनों के मुख्य कारण अंग्रेज ही हैं।"

यही नहीं, 20वीं सदी की शुरुआत में दादाभाई नौरोजी ने धन के अपवहन (ड्रेन ऑफ वेल्थ) के जिस सिद्धान्त को प्रस्तुत किया था, भारतेन्दु ने बहुत पहले ही शोषण के इस रूप को समझ लिया था। उन्होंने अपनी विरचित बहुचर्चित और सुविख्यात कविता 'भारत-दुर्दशा में लिखा था –

"अंगरेजी राज सुखसाज सजे अति भारी, पर सब धन विदेश चलि जात ये ख्वारी।"

अंग्रेज भारत का धन अपने यहाँ लेकर चले जाते हैं और यही देश की जनता की गरीबी और कष्टों का मूल कारण है, इस सच्चाई को भारतेंदु ने समझ लिया था। कविवचनसुधा में उन्होंने जनता का आह्वान किया था–

"भाइयो! अब तो सन्नद्ध हो जाओ और ताल ठोक के इनके सामने खड़े तो हो जाओ। देखो भारतवर्ष का धन जिसमें जाने न पावे वह उपाय करो।"[1]

बोध प्रश्न - 1

1. भारतेन्दु ने विलायती कपड़ों के बहिष्कार की अपील करते हुए स्वदेशी प्रतिज्ञा पत्र 'कविवचनसुधा' में कब प्रकाशित किया?

   ……..

   ……..

   ……..

2. पहली बार साहित्य में 'जन' शब्द का समावेश किसने किया ?

   ……..

   ……..

   ……..

15.3 मैथिलीशरण गुप्त (3 अगस्त 1886 – 12 दिसम्बर 1964)

मैथिलीशरण गुप्त (1861-1956) हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध कवि और नाटककार थे। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई

[1] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%81_%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0

थी और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी। उनके पद्य साहित्य में राष्ट्रीय विचारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत करने, स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित करने, सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय एकता और भाईचारे को मजबूत करने का प्रयास किया।

राष्ट्रीय चेतना जागरण

मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचनाओं में भारत की वीर परंपराओं, समृद्ध संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण कर लोगों में राष्ट्रप्रेम और गौरव की भावना जगाई। उन्होंने "भारत भारती", "साकेत", "द्वापर" जैसी रचनाएं लिखीं, जिनमें उन्होंने भारत के अतीत की शानदार उपलब्धियों का वर्णन किया।

स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरणा

मैथिलीशरण गुप्त ने क्रांतिकारी विचारों को व्यक्त किया, देशभक्तों का उत्साहवर्धन किया और बलिदान की भावना को प्रेरित किया। उन्होंने "यशोधरा", "नहुष" जैसी रचनाएं लिखीं, जिनमें उन्होंने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया।

सामाजिक सुधार

मैथिलीशरण गुप्त ने अनेक सामाजिक कुरीतियों और बुराइयों, जैसे जातिवाद, छुआछूत, दहेज प्रथा, और बाल विवाह के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के महत्त्व पर भी बल दिया। उनकी रचनाओं ने सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने और एक अधिक न्यायपूर्ण और समान समाज की स्थापना में योगदान दिया।

राष्ट्रीय एकता और भाईचारा

मैथिलीशरण गुप्त ने विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोगों के बीच एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत करने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में मानवतावाद और सार्वभौमिक प्रेम के संदेश का प्रचार किया। उन्होंने लोगों को एकजुट होकर राष्ट्रीय हितों के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया।

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में राष्ट्रीय विचारों के कुछ उदाहरण

- **"भारत भारती"**

  "हिमालय से लंका तक धरती यह प्यारी, यह भारत देश हमारा, न्यारी इसकी भारी।"

- **"साकेत"**

  "यह चिरकाल की पुकार है, भारत माता की पुकार, जग उठे, जग मग उठे, उठे ध्वनि संसार।"

- **"यशोधरा"**

  "यह स्वतंत्रता वीरों का, यह वीरों का जीवन, यह स्वतंत्रता वीरों का, यह वीरों का मरण।"

मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट-कूट कर भर गए थे। इसी कारण उनकी सभी रचनाएँ राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। परन्तु अन्धविश्वासों और थोथे आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति

की नवीनतम रूप की कामना करते थे।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। इसमें भारत के गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन है। आपने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता प्रदान की है और नारी मात्र को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। गुप्त जी ने प्रबंध काव्य तथा मुक्तक काव्य दोनों की रचना की। शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग किया है।[2]

भारत भारती में देश की वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट करते हुए कवि ने देश के अतीत का अत्यंत गौरव और श्रद्धा के साथ गुणगान किया। भारत श्रेष्ठ था, है और सदैव रहेगा का भाव इन पंक्तियों में गुंजायमान है-

भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहाँ?
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है।
गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता

एक समुन्नत, सुगठित और सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार और उदात्त चरित्र वाले नर-नारी के निर्माण की दिशा में उन्होंने प्राचीन आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर उनके सभी पात्रों को एक नया अभिप्राय दिया है। जयद्रथवध, साकेत, पंचवटी, सैरन्ध्री, बक संहार, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जयभारत, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया एवं रत्नावली आदि रचनाएं इसके उदाहरण हैं।

बोध प्रश्न - 2

1. मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्रकवि' की पदवी किसने प्रदान की ?

   ……..
   ……..
   ……..
   ……..

2. मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी किन रचनाओं में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया ?

   ……..
   ……..
   ……..
   ……..

[2] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80%E0%A4%B6%E0%A4%B0%E0%A4%A3_%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%A4

15.4 जयशंकर प्रसाद (30 जनवरी 1889- 15 नवंबर 1937)

जयशंकर प्रसाद हिन्दी कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्ध-लेखक थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य में एक तरह से छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ीबोली के काव्य में न केवल कामनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और 'कामायनी' तक पहुँचकर वे काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गये । बाद के, प्रगतिशील एवं नयी कविता दोनों धाराओं के, प्रमुख आलोचकों ने उनकी इस शक्तिमत्ता को स्वीकृति दी। इसका एक अतिरिक्त प्रभाव यह भी हुआ कि 'खड़ीबोली' हिन्दी काव्य की निर्विवाद सिद्ध भाषा बन गयी। उनके पद्य साहित्य में राष्ट्रीय विचारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारत की वीर परंपराओं, समृद्ध संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण कर लोगों में राष्ट्रप्रेम और गौरव की भावना जगाई।[3]

राष्ट्रीय चेतना जागरण

जयशंकर प्रसाद ने अपनी रचनाओं में भारत के स्वर्णिम अतीत का स्मरण कराकर लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया। उन्होंने 'कामायनी' में मानव सभ्यता के विकास का चित्रण किया है।

इसके अलावा, उन्होंने 'आंसू', 'चित्राधार' और 'अनुपमा' जैसी रचनाओं में भी राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त किया है।

स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरणा

जयशंकर प्रसाद ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरणा देने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 'कामायनी' में मानव जीवन के संघर्ष और विजय का चित्रण कर लोगों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने 'आंसू' और 'अनुपमा' जैसी रचनाओं में भी देशभक्ति और बलिदान की भावना को व्यक्त किया है।

सामाजिक सुधार

जयशंकर प्रसाद सामाजिक सुधारों के समर्थक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में जातिवाद, छुआछूत, दहेज प्रथा और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई।

उन्होंने 'आंसू' और 'चित्राधार' जैसी रचनाओं में महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के महत्त्व पर भी बल दिया।

राष्ट्रीय एकता और भाईचारा

जयशंकर प्रसाद विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोगों के बीच एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत करने में विश्वास रखते थे।

---

[3] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A4%AF%E0%A4%B6%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6

उन्होंने अपनी रचनाओं में मानवतावाद और सार्वभौमिक प्रेम के संदेश का प्रचार किया। उन्होंने लोगों को एकजुट होकर राष्ट्रीय हितों के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया।

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में राष्ट्रीय विचारों के कुछ उदाहरण

जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रतिनिधि कवि हैं । प्रकृति, सौंदर्य, प्रेम, व्यथा, करुणा, आशा आदि की भावमयी व्यंजना उनकी काव्यरचना की विशिष्टता है, परन्तु साथ ही उनकी रचनाओं में मानवतावादी राष्ट्रीय चेतना के विकसित रूप के दर्शन भी होते हैं । प्रसाद जी भारत के अतीत गौरव के उन्नायक रहे हैं । उन्होंने अन्धकार में पड़े हमारे उज्ज्वल अतीत को प्रकाश दिखाया है । प्रसाद जी की 'पेशोला की प्रतिध्वनि', 'प्रलय की छाया', 'भारतगीत' आदि कविताओं में जैसे राष्ट्रीय स्वाभिमान को वाणी मिली है । 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता में कवि ने राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर ही भारत की दुर्दशा का चित्र अंकित किया है -

कालिमा बिखरती है संध्या के कलंक सी
दुंदुभी-मृदंग-तूर्य शान्त, स्तम्भ, मौन हैं ।

इस कविता में कवि ने स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले महाराणा प्रताप के त्याग को रूपायित किया है । इसके माध्यम से सम्पूर्ण अतीत की गरिमा जाग उठती है ।

कविताओं की अपेक्षा प्रसाद जी के नाटकों में राष्ट्रीयता अधिक मुखरित हुई है । 'चन्द्रगुप्त' नाटक में उनकी यह राष्ट्रीय चेतना अपने पूर्ण विकसित रूप में दिखाई देती है । उसकी विषयवस्तु का केंद्रबिंदु राष्ट्रीय तत्त्व ही है । प्रसाद जी ने वर्तमान को दृष्टि में रखकर इसमें अतीत के गौरव का ऐसा चित्रण किया है जो पाठक में राष्ट्रीय स्फूर्ति को उत्पन्न करने में पूर्णतया सक्षम है । जयशंकर प्रसाद ने चाणक्य, चन्द्रगुप्त, सिंहरण, अलका आदि उदात्त और देशभक्त चरित्रों के संघटन द्वारा नाटककार ने राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्मोत्सर्ग का आदर्श रूप चित्रित किया है । अलका देश के कण-कण से प्रेम करती है, उसके इस कथन से देशप्रेम की उदात्त अभिव्यक्ति है, "मेरा देश है, मेरे पहाड़ हैं, मेरी नदियाँ हैं और मेरे जंगल हैं । इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे हैं और मेरे शरीर के एक-एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं से बने हुए हैं।"

जयशंकर प्रसाद जी ने विदेशी बाला कार्नेलिया के मुख से भारत के गौरव और शोभा का बड़ा सजीव वर्णन चन्द्रगुप्त नाटक में प्रस्तुत करवाया है । उसके द्वारा गाया हुआ गीत 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' देश के प्रति उसके असीम अनुराग और स्नेह को प्रकट करता है । इस गीत से प्रसाद की राष्ट्रीयता अंतर्राष्ट्रीयता को भी एक आश्रय देती है और युगीन राष्ट्रीय भावना को विश्वबंधुत्व से जोड़ती है । कार्नेलिया भारतवर्ष से अपनी जन्मभूमि के समान प्रेम करती है । भारत की महत्ता से अभिभूत होकर वह चन्द्रगुप्त से कहती है - "मुझे इस देश से, जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है।.....अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि हैं, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।" इसी प्रकार भारत की गौरवगरिमा का सम्मान करते हुए सिकन्दर ने चाणक्य से कहा है - "धन्य हैं आप, मैं तलवार खींचे हुए भारत में आया - हृदय देकर जाता हूँ।"[4]

जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' का मुख्य उद्देश्य 'देश को विदेशी हूणों से मुक्त कराना' है । इसमें नाटककार ने भारत देश को विश्वसंस्कृति का जन्मस्थल बताते हुए लिखा है, "सभ्यता और संस्कृति के सम्बन्ध में भारत को विश्वजननी का गौरव प्राप्त हो रहा है । वह प्रेम, सभ्यता,

[4] राष्ट्रीयता और भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, पृ. 165-166

विद्या, वैभव का गृह रहा है । सबसे पहले संस्कृति का जन्म भारत में हुआ है ।" सांस्कृतिक उत्कर्ष और प्राकृतिक सुषमा के देश भारत की दिव्यता का गान स्कन्दगुप्त नाटक में मातृगुप्त द्वारा इन शब्दों में किया गया है -

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जयशंकर प्रसाद के पद्य साहित्य में राष्ट्रीय विचारों का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत करने, स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित करने, सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय एकता और भाईचारे को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बोध प्रश्न - 3

1. जयशंकर प्रसाद ने अपनी किस रचना में मानव सभ्यता के विकास का चित्रण किया है?

   ……..

   ……..

   ……..

2. जयशंकर प्रसाद ने अपनी किस रचना में देशभक्ति और बलिदान की भावना को व्यक्त किया है?

   ……..

   ……..

   ……..

15.5 माखनलाल चतुर्वेदी (4 अप्रैल 1889-30 जनवरी 1968)

माखनलाल चतुर्वेदी भारत के ख्यातिलब्ध कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। 'प्रभा' और 'कर्मवीर' जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। वे सच्चे देशप्रेमी थे और 1921-22 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है, इसलिए वे सच्चे अर्थों में युग-चारण माने जाते हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी का तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्य ऐसा था जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आग में लोग जोश से जल रहे थे। उनके समय में लोकमान्य तिलक की उक्ति ने स्वतंत्रता के प्रति लोगों में उत्साह भर दिया था और गांधीजी के सत्याग्रह के सिद्धांतों ने लोगों को विचार के साथ आंदोलन में जुटने हेतु प्रेरणा स्रोत दिया था। साथ ही, स्वदेशी आन्दोलन, सामाजिक सुधार, और राजनीतिक चेतना के माध्यम से लोगों में एक नई राष्ट्रीय जागरूकता का संचार हो रहा था।

माधवराव सप्रे के 'हिंदी केसरी' के द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता, जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी का निबंध प्रथम स्थान पर रहा, उसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भावना को और अधिक जागरुक किया। उनकी निबंधित कला और उनके विचार ने उन्हें लोकप्रियता और सम्मान का बांधव बना दिया।

माखनलालजी की पत्रकारिता और साहित्यिक योगदान ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कराई। उन्होंने 'प्रभा', 'कर्मवीर', और 'प्रताप' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया, जो राष्ट्रीय आंदोलन को सार्थक और प्रभावी ढंग से प्रचारित करती थीं। उनकी कविताएं, निबंध, नाटक, और कहानियाँ लोगों को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के महत्त्व को समझाने में मदद करती थीं। उनके अभिभाषण और व्याख्यान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों को लोगों तक पहुंचाते थे। उनके साहित्यिक और सामाजिक योगदान ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा के रूप में स्मरणीय बना दिया।[5]

माखनलाल चतुर्वेदी की अधिकांश रचनाएँ राष्ट्रीयता के ताने बाने से बंधी हुई हैं। उनकी वाणी राष्ट्र के मर्म की वाणी है। चतुर्वेदी जी ने नयी पीढ़ी को स्वाधीनता के लिए दमन और यातना के प्रहारों को झेलते हुए हंस-हंस कर सूली पर चढ़ जाने की प्रेरणा दी। उनकी निश्चित धारणा थी -

देवी स्वतन्त्रता तो बलिदान चाहती है।

चतुर्वेदी जी के काव्यों में बलिदान और प्राणोत्सर्ग का आग्रह है। 'हिमकिरीटिनी' में युवकों को संदेश देते हुए उन्होंने कहा है -

खून हो जाये न ते देख, पानी,
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

18 फ़रवरी, सन् 1922 को चतुर्वेदी जी ने बिलासपुर जेल में 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता लिखी, जिसमें उन्होंने मातृभूमि की रक्षा हेतु भारतीयों से आत्म-समर्पण का आह्वान किया -

मुझे तोड़ लेना वनमाली !
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीयता अनेक छवियों के साथ दिखाई देती है। राष्ट्र के प्रति अत्यन्त अनुराग, राष्ट्रसेवकों और राष्ट्रनेताओं के प्रति स्नेह एवं श्रद्धा, देशवासियों के लिए जागरण का सन्देश, विदेशी शासन के प्रति विद्रोह, सत्याग्रह के प्रति आस्था, बलिदान की भावना आदि को दर्शाने वाली उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता के लगभग सभी प्रमुख तत्त्वों का समावेश हुआ है। उन्होंने सन् 1920 में 'तिलक' नामक एक कविता लिखी, जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

[5] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%96%E0%A4%A8%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%9A%E0%A4%A4%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A5%80

बंदी होवे वह दयाहीन,
तू भारतीय आज़ाद रहे।
वह स्वर्ग टूट कर गिर जाये,
यह आर्यभूमि आबाद रहे।

कोयल को उलाहना देते हुए उन्होंने निर्भीक होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीयों के क्षोभ को व्यक्त किया -

काली तू रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली।

विदेशी शासन के विरोध में उन्होंने ज़ोर से ललकारते हुए कहा कि -

बलि होने की परवाह नहीं
मैं हूँ कष्टों का राज्य रहे।
मैं जीता, जीता, जीता हूँ
माता के हाथ स्वराज्य रहे।

अतः स्पष्ट है कि माखनलाल चतुर्वेदी मूलतः राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। उनके काव्य में राष्ट्रीयता, सामयिकता और शाश्वत युगबोध की समर्थ अभिव्यक्ति है। उनकी कवि-वाणी देशभक्ति और राष्ट्र-चेतना के उद्गारों से परिपूर्ण है। उनकी कविताओं के इस महत्त्व पर डॉ. नगेंद्र ने लिखा है, 'इन कविताओं में ओजस्विता का उद्गम है - कवि की राष्ट्रीयता। यह राष्ट्रीयता कविता में केवल देशभक्ति के रूप में ही व्यक्त हुई है।' इस प्रकार कहा जा सकता है कि माखनलाल चतुर्वेदी के बिना हिन्दी में राष्ट्रीयता का काव्य अधूरा है।[6]

बोध प्रश्न - 4

1. माखनलाल चतुर्वेदी किन दो प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक थे?

   ……..
   ……..
   ……..
   ……..

2. "खून हो जाये न ते देख, पानी, मरण का त्योहार, जीवन की जवानी" - ये पक्तियाँ कहाँ से उद्धृत हैं ?

   ……..
   ……..
   ……..
   ……..

[6] राष्ट्रीयता और भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, पृ. 173

15.6 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (21 फरवरी, 1899 - 15 अक्टूबर, 1961)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ वे छायावाद के मुख्य स्तंभों में शामिल हैं। उन्होंने कविताओं के अलावा कई कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे, लेकिन उनकी ख्याति विशेष रूप से उनकी कविताओं के लिए ही है।[7]

कवि निराला छायावादी काव्यधारा के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं, साथ ही प्रगतिवादी काव्यधारा के भी अग्रणी उन्नायकों में से एक हैं। उन्होंने काव्य की भाषा, शैली, और भाव के सभी पक्षों में नई मान्यताएँ स्थापित की हैं। इस कारण, हिन्दी काव्यधारा में स्वच्छंदतावाद के विकास का श्रेय निराला को दिया जाता है। उन्होंने केवल छंद के बंधनों को ही नहीं तोड़ा, बल्कि समाज की रूढ़ियों और आडंबरों पर भी प्रहार किया, अपने विद्रोही स्वर से जनता को नवजागरण के लिए प्रेरित किया। उनके काव्य में विविधता की झलक मिलती है - प्रकृति चित्रण, करुणा, दर्शन, उदात्त प्रेम जैसे अनेक तत्त्व उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत होते हैं। उनकी रचनाओं में मानव की पीड़ा, परतंत्रता और परवशता के प्रति उत्पन्न आक्रोश स्पष्ट सुनाई देता है। उनमें अन्याय और असमानता के प्रति विद्रोह की घोषणा तथा विषमताओं और विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष की तीव्र गर्जना भी दिखाई देती है। कवि का विद्रोह 'नवजीवन' का पर्याय है। कवि ने बादल को प्रतीक बनाकर समाज में नवक्रांति लाने और मानव के हृदय में उथल-पुथल मचाने का आह्वान किया है -

उथल-पुथल कर हृदय -
मचा हलचल, चल रे चल,
मेरे पागल बादल।

निराला एक क्रांतिकारी कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। कवयित्री महादेवी वर्मा के शब्दों में, "निराला जी विचार और आचरण, दोनों में क्रांतिकारी हैं। वे उस तूफान की तरह हैं जो हल्की वस्तुओं के साथ भारी वस्तुओं को भी उड़ा ले जाती है।"[8]

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की रचनाओं में राष्ट्रीय विचार-

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के रचना-संसार के पीछे उग्र राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की अपार प्रेरणा रही है। इसीलिए उन्हें राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता का प्रमुख कवि माना जाता है। उनकी राष्ट्रीय कविताओं में परतंत्रता से मुक्ति का आह्वान, प्राचीन भारत का गौरवगान, राष्ट्रीय एकात्मता की भावना, वर्तमान दुर्दशा के प्रति क्षोभ, पूर्वजों के आदर्शों का अनुकरण, मातृभूमि की वंदना और स्वर्णिम भविष्य की मंगल कामना जैसे भाव प्रकट होते हैं। वास्तव में, निराला के व्यक्तित्व का निर्माण ही राष्ट्रीय चेतना के प्रज्वलित वातावरण में हुआ

[7] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4_%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%A0%E0%A5%80_%27%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%BE%27

[8] राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, पृ. 179

था। सन् 1920 से सन् 1947 तक के राष्ट्रीय आंदोलन की सभी भावनाएँ उनके साहित्य की प्रेरणा बनीं। उनके मन में भारतीय स्वतंत्रता के प्रति गहरा मोह था। इसीलिए मातृभूमि के प्रति प्रेम भावना उनकी राष्ट्रीयता का मूल आधार रही। उन्होंने अनेक रूपों में भारत के भव्य स्वरूप की कल्पना कर उसकी चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित की।

'जन्मभूमि मेरी जगन्महारानी' निराला की जन्मभूमि से संबंधित पहली प्रकाशित रचना है। मातृभूमि के प्रति उनकी यह प्रेमभावना और प्रार्थना बाद में 'भारति, जय विजय करे!' जैसी कविताओं में और भी विकसित हुई। एक कविता में कवि ने अपने देश की दिव्यभूमि को देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया है। विशाल और साकार रूप की परिकल्पना करते हुए उन्होंने लिखा है कि "इसके पदतल में लंकाद्वीप स्थित है, सागर इसका चरण धो रहा है, वृक्ष, घास, वन और लताएँ इसके वस्त्र हैं, गंगा के ज्योतिर्मय जलकणों का हार इसके गले में शोभित है, हिमालय का शुभ्र मुकुट इसके सिर पर है और इसके ओंकार की मधुर ध्वनि से सारी दिशाएँ गूंज रही हैं।" कवि ने भारत की भौगोलिक विशालता और प्राकृतिक सुंदरता का उल्लेख करते हुए पूरे राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में भारत माँ की वंदना की है। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने माँ सरस्वती की वंदना की है और उनसे भारत में स्वतंत्रता की अमर ध्वनि और नव अमृत मंत्र भरने की प्रार्थना की है:

वर दे वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

महाकवि निराला ने भारत के स्वर्णिम अतीत की यादों को ताजा करके राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति की है। दिव्य मानवीय गुणों से सम्पन्न महापुरुषों की कर्मभूमि यही भारतवर्ष है। भीष्म, भीम, अर्जुन जैसे दृढ़व्रती यहीं पर जन्मे; व्यास, वाल्मीकि, कालिदास जैसे महान कवि भी यहीं पर हुए। फिर उनके स्मरण से कोई देशवासी हीनता का अनुभव कैसे कर सकता है? 'खण्डहर के प्रति' शीर्षक कविता में उन्होंने लिखा है:

आर्त भारत! जनक हूँ मैं
जैमिनि-पतंजलि-व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोद पर शैशव विनोद कर
तेरा है बढ़ाया मान
राम-कृष्ण-भीमार्जुन-भीष्म नरदेवों ने
तुमने मुख फेर लिया...

इस कविता में उन्होंने भारत के गौरवशाली अतीत और महान व्यक्तियों का स्मरण कर देशवासियों को प्रेरित किया है।

बोध प्रश्न - 5

1. किसके शब्दों में, "निराला जी विचार और आचरण, दोनों में क्रांतिकारी हैं ?

   ……..

   ……..

2. निराला की जन्मभूमि से संबंधित पहली प्रकाशित रचना कौनसी है ?

……..

……..

……..

15.7 यशपाल (3 दिसम्बर 1903 - 26 दिसम्बर 1976)

यशपाल हिन्दी साहित्य के प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार हैं। ये विद्यार्थी जीवन से ही क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े थे। इन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन् 1970 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। यशपाल हिन्दी साहित्य के एक प्रतिष्ठित लेखक थे जिन्होंने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया। उनकी कविताएं और गीत देशभक्ति, सामाजिक न्याय और मानवतावाद के संदेश से परिपूर्ण हैं।

यशपाल की लेखन विधा में उपन्यास प्रमुख हैं, लेकिन उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा कहानियों से शुरू की थी। उनकी कहानियाँ उनके उपन्यासों की तरह समय की राजनीति से प्रभावित नहीं हैं। नई कहानी के दौर में स्त्री के मन और शरीर के कृत्रिम विभाजन के विरुद्ध एक संपूर्ण स्त्री की छवि को प्रस्तुत करने की वास्तविक शुरुआत यशपाल से ही होती है। आज की कहानियों के विचारों में यशपाल की कई कहानियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्तमान और भविष्य के कथा परिदृश्य में उनकी प्रासंगिकता निर्विवाद है। उनके प्रमुख कहानी संग्रहों में पिंजरे की उड़ान, ज्ञानदान, भस्मावृत्त चिनगारी, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ और उत्तमी की माँ शामिल हैं।

यशपाल ने जिस दुनिया के निर्माण के लिए सक्रिय राजनीति से साहित्य की ओर रुख किया, उसका नक्शा उनके सामने शुरू से ही काफी हद तक स्पष्ट था। उन्होंने किसी आदर्शलोक की बजाय व्यवस्था की वास्तविक उपलब्धियों को ही अपना आधार बनाया। यशपाल की वैचारिक यात्रा में यह सिद्धांत प्रारंभ से अंत तक सक्रिय रहा कि जनता का व्यापक सहयोग और सक्रिय भागीदारी ही किसी राष्ट्र के निर्माण और विकास के मुख्य कारक हैं। यशपाल हमेशा जनता के व्यापक हितों के समर्थक और संरक्षक रहे हैं। जब वे अपनी पत्रकारिता और लेखन को 'बुलेट की जगह बुलेटिन' के रूप में परिभाषित करते हैं, तो वे अपने रचनात्मक उद्देश्यों पर टिप्पणी कर रहे होते हैं। ऐसे दुर्धर्ष लेखक के प्रतिनिधि रचनाकर्म का यह संचयन उसे संपूर्णता में जानने-समझने के लिए प्रेरित करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

यशपाल ने वर्षों तक 'विप्लव' पत्र का संपादन-संचालन किया। उनकी रचनाओं में समाज के शोषित, उत्पीड़ित और सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षरत व्यक्तियों के प्रति गहरी आत्मीयता दिखाई देती है। उन्होंने धार्मिक ढोंग और समाज की झूठी नैतिकताओं पर करारी चोट की। उनकी कई रचनाओं का देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। उनके उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

यशपाल के राष्ट्रीय विचारों की विशेषताएं

- **क्रांतिकारी भावना:** यशपाल ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी भावना को जगाया और स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया।

- **सामाजिक यथार्थवाद:** उन्होंने समाज में व्याप्त गरीबी, भ्रष्टाचार और शोषण को उजागर किया।
- **मानवतावाद:** यशपाल ने मानवता के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की और सभी मनुष्यों के लिए समानता और न्याय की वकालत की।
- **आशावाद:** उन्होंने भविष्य के प्रति आशावाद व्यक्त किया और एक बेहतर समाज के निर्माण का सपना देखा।
- 'विप्लव' पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छपने वाली ये पंक्तियाँ उनके विचारों का संकेत देती हैं - तुम करो शान्ति-समता प्रसार, विप्लव ! है अपना अमर गान !

यशपाल की भाषा सरल और सहज है, जिससे उनकी रचनाएं आम लोगों तक आसानी से पहुंच पाती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में विभिन्न काव्य शैलियों का प्रयोग किया है, जिसमें गीत, मुक्तक, प्रगीतकाव्य और नाटक शामिल हैं।

बोध प्रश्न - 6

1. कवि यशपाल जी को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा कब पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था?

   .....

   .....

   .....

2. यशपाल ने वर्षों तक किस पत्र का संपादन-संचालन किया?

   .....

   .....

   .....

15.8 सुभद्राकुमारी चौहान (16 अगस्त 1904 - 15 फरवरी 1948)

सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। झाँसी की रानी (कविता) उनकी प्रसिद्ध कविता है। वे राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं। स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात् अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया।

'बिखरे मोती' सुभद्रा कुमारी चौहान का पहला कहानी संग्रह है, जिसमें भग्नावशेष, होली, पापीपेट, मंछलीरानी, परिवर्तन, दृष्टिकोण, कदम्ब के फूल, किस्मत, मछुये की बेटी, एकादशी, आहुति, थाती, अमराई, अनुरोध, और ग्रामीणा कुल 15 कहानियाँ शामिल हैं। इन कहानियों की भाषा सरल और बोलचाल की है और अधिकांश कहानियाँ नारी विमर्श पर केंद्रित हैं। उनका दूसरा कथा संग्रह 'उन्मादिनी' 1934 में प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्मादिनी, असमंजस, अभियुक्त, सोने की कंठी, नारी हृदय, पवित्र ईर्ष्या, अंगूठी की खोज, चढ़ा दिमाग, और वेश्या की लड़की कुल 9 कहानियाँ हैं। इन कहानियों का मुख्य स्वर पारिवारिक और सामाजिक

परिदृश्य है।[9]

'सीधे-सादे चित्र' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा और अंतिम कथा संग्रह है, जिसमें १४ कहानियाँ हैं। रूपा, कैलाशी नानी, बिआल्हा, कल्याणी, दो साथी, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी, और मंगला जैसी 8 कहानियाँ नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्याओं पर आधारित हैं। हींगवाला, राही, तांगे वाला, और गुलाबसिंह कहानियाँ राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियाँ लिखी हैं और अपनी व्यापक कथा दृष्टि के कारण वे हिन्दी साहित्य में एक अति लोकप्रिय कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

इनकी कहानियों की भाषा सरल और काव्यात्मक है, जिसमें वातावरण का सजीव चित्रण प्रमुख है, जिससे इनकी रचनाएँ सादगीपूर्ण और हृदयग्राही बन जाती हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान के राष्ट्रीय विचारों की विशेषताएं:

वीर रस का प्रभाव: सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में वीर रस का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने वीर योद्धाओं, क्रांतिकारियों और देशभक्तों की वीरता और बलिदान का गौरवगान किया है।

देशभक्ति का भाव: उनकी रचनाओं में देशभक्ति का भाव प्रबल है। उन्होंने देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना को जगाया है।

सामाजिक सुधार: उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, जैसे जातिवाद, छुआछूत और बाल विवाह का विरोध किया।

नारी सशक्तिकरण: उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण और समानता का समर्थन किया।

सुभद्राकुमारी चौहान की प्रमुख रचनाओं में देशप्रेम:

सुभद्राकुमारी ने जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड की प्रतिक्रिया पर बहुत ही मार्मिक कविताएँ लिखीं। अपनी कविता 'जलियाँवाले बाग में वसन्त' के अंतिम भाग में कवयित्री लिखती हैं -

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना॥
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर॥
यह सब करना, किन्तु
बहुत धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान
यहाँ मत शोर-मचाना॥

सुभद्राकुमारी चौहान 'जेल' को तीर्थस्थान मानकर अपनी कविता 'विदा' में लिखती हैं -

[9] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%AD%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE_%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80_%E0%A4%9A%E0%A5%8C%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%A8

जेल ! हमारे मनमोहन के प्यारे पावन जन्मस्थान,
तुझ को सदा तीर्थ मानेगा कृष्णभक्त यह हिन्दुस्तान।

उनकी कविता 'झाँसी की रानी' कुछ ही दिनों में अत्यन्त लोकप्रिय हो गयी। इस कविता के अनुसार रानी के रूप में स्वतंत्रता ही नारी का रूप धारण कर भारतवासियों को जगाने हेतु आई है -

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

यह कविता रानी की शूरवीरता, निर्भयता और राष्ट्रप्रेम का ओजस्वी वर्णन करने के कारण उनका स्मारक बन गयी है। लोगों ने इसे राष्ट्र के हृदय की झंकार माना।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय अपनी कविताओं के माध्यम से जनसमुदाय को प्रेरित करने वाली सुभद्राकुमारी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वतन्त्र देश के स्वागत में लिखा -

आ, स्वतन्त्र प्यारे स्वदेश आ,
स्वागत करती हूँ तेरा।
तुझे देख कर आज हो रहा,
दूना प्रमुदित मन मेरा॥

सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। उन्होंने अपनी रचनाओं में विभिन्न काव्य शैलियों का प्रयोग किया है, जिसमें वीर रस, देशभक्ति गीत, मुक्तक और प्रगीतकाव्य शामिल हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने हिन्दी पद्य साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाओं ने राष्ट्रीय चेतना जागृत करने, वीरता और देशभक्ति को प्रेरित करने और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी साहित्य की एक वीरांगना कवयित्री थीं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना को प्रखरता से व्यक्त किया। उनकी कविताएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और राष्ट्रीय गौरव का भाव जगाती हैं।

बोध प्रश्न - 7

1. सुभद्रा कुमारी चौहान का पहला कहानी संग्रह कौनसा है ?
2. सुभद्रा कुमारी चौहान का दूसरा कथा संग्रह 'उन्मादिनी' किस वर्ष में प्रकाशित हुआ ?

अभ्यास प्रश्न - 1

1. सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाओं में देशप्रेम को प्रदर्शित करते हुए एक लघु निबन्ध लिखें।

……..

……..

……..

……..

15.9 रामधारी सिंह 'दिनकर' (23 सितम्बर 1908- 24 अप्रैल 1974)

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के प्रमुख लेखक, कवि और निबंधकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता को उनके काव्य की मूल-भूमि मानते हुए उन्हें 'युग-चारण' और 'काल के चारण' की संज्ञा दी गई है।

स्वतंत्रता से पूर्व 'दिनकर' एक विद्रोही कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए और स्वतंत्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गए। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के प्रमुख कवि थे। उनकी कविताओं में एक ओर ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की पुकार है, तो दूसरी ओर कोमल शृङ्गारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन दोनों प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष उनकी कृतियों 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' में देखा जा सकता है।[10]

कवि दिनकर ने अपने बाल्यकाल से ही साहित्य सृजन की शुरुआत कर दी थी और सतत् साहित्य साधना में लगे रहे। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में लेखन करके हिंदी साहित्य को कई महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रदान की हैं। उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं - रेणुका, हुंकार, द्वंदगीत, रसवंती, सामधेनी, कुरुक्षेत्र, बापू, धूप और धुआँ, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, दिल्ली, इतिहास के आंसू और रश्मिलोक। उनकी गद्य रचनाओं में उल्लेखनीय हैं - मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, भारतीय संस्कृति के चार अध्याय और उजली आग।[11]

कवि दिनकर के काव्य की मुख्य चेतना राष्ट्रवादी है। उनकी साहित्य साधना ने छायावादी युग के बाद लिखे गए राष्ट्रीय साहित्य को मजबूत आधार प्रदान किया है। उनके काव्य में विविधता भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अपने काव्य के माध्यम से दिनकर ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त किया है। उनके काव्य में कहीं जन जागरण की पुकार है, कहीं राष्ट्रीयता का प्रखर स्वर है, तो कहीं छायावादी प्रवृत्तियों के प्रति लगाव है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनका अटूट प्रेम उनके काव्य में झलकता है।

दिनकर का लेखन देश की पराधीनता से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तक फैला हुआ है। उनके राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित काव्य के दो मुख्य पक्ष हैं: अतीत के प्रति आकर्षण और वर्तमान के प्रति असंतोष। 1935 में प्रकाशित उनकी कृति 'रेणुका' में जन जागृति की भावना के प्रति उनकी प्रबल आस्था दिखाई देती है। काव्य कृति 'ओंकार' में कवि की वाणी ओजपूर्ण हो जाती है। उनकी राष्ट्रीय कविताएँ राष्ट्रीय परंपराओं के गौरव से प्रेरित हैं, जिनमें उन्होंने देश को क्रांति, बलिदान और विद्रोह की प्रेरणा दी है। 'द्वंद्वगीत' रचना कवि के अंतर्मन में उठ रहे द्वंद्व की प्रतीक है।[12]

अपनी रचना 'धूप और धुआँ' में कवि ने स्वराज्य प्राप्ति के हर्ष और आम जनजीवन में व्याप्त असंतोष का चित्रण किया है। 'रश्मिरथी' प्रबंधकाव्य में उन्होंने दानवीर कर्ण के चरित्र के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया है। 'उर्वशी' एक विचार-प्रधान प्रबंधकृति है, जिसमें कवि ने नर-नारी की प्रेम समस्या पर गहराई से विचार किया है। 'परशुराम की

[10] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B9_%27%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A4%95%E0%A4%B0%27

[11] राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, पृ. 208

[12] वहीं, पृ. 209

प्रतीक्षा' वीरभावना प्रधान कविता संग्रह है, जिसकी रचना भारत पर चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में हुई है। इसमें कवि की राष्ट्रीय चेतना और देशगौरव को जगाने वाली ओजपूर्ण वाणी सुनाई देती है[13] -

खोजो टीपू सुलतान कहाँ सोये हैं ?
अशफ़ाक और उसमान कहाँ सोये हैं ?

रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना पहले क्रांति और विद्रोह के स्वर में प्रकट हुई, फिर उन्होंने इसे अतीत के गौरव से सजाया। दिनकर के काव्य से उनके विचारों का पता चलता है। उनकी जीवन दृष्टि समन्वयवादी है। वे गांधीवादी अवश्य हैं, परंतु शक्तिविहीन विनम्रता की शांति उन्हें स्वीकार नहीं है। पूंजीवादी शोषण के प्रति उनका दृष्टिकोण विद्रोही रहा है। वे मानवतावाद और विश्वबंधुत्व का समर्थन करते हैं, किंतु मानवमात्र के हित की चिंता से पहले अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा को महत्त्वपूर्ण समझते हैं। उनका संदेश देशवासियों के लिए है -

स्वातन्त्र्य जाति की लगन व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।

कवि ने राष्ट्र विरोधियों को ललकारा है तो राष्ट्र प्रेमियों पर श्रद्धा दर्शायी है। महात्मा गाँधी के प्रति उनकी कविताओं में असीम आदर है। देश के लिए शहीद होने वालों के प्रति कृतज्ञता का भाव है। दिनकर ने विदेशी शासकों और शोषण करने वाले अधिकारियों को चुनौती दी है। स्वतंत्र देश के भ्रष्ट राजनीतिज्ञों और नेताओं की भी उन्होंने कटु निंदा की है। दिनकर भारत के अतीत के प्रति आस्थावान् हैं, तभी उन्होंने अपने प्रबंधकाव्य ऐतिहासिक कथानक पर रचे हैं।

कविवर दिनकर के राष्ट्रीय काव्य का प्रमुख आधार सांस्कृतिक चेतना है। उनकी दृष्टि में कुछ महत्त्वपूर्ण शाश्वत मूल्य की स्थिति ही 'भारतवर्ष' का स्वरूप बनाती है। 'मेरे प्यारे देश' नामक कविता में उन्होंने देश को बड़े ही स्नेह से महिमामंडित करते हुए नमन किया है[14] -

मानवता के इस ललाट-चंदन को नमन करूँ मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करूँ मैं ?

26 जनवरी, सन् 1950 ई. के उपलक्ष्य में उन्होंने 'जनतंत्र का जन्म' नामक कविता लिखी, जिसमें उन्होंने स्वाभिमान जागते हुए भारतीय लोकतंत्र का स्वागत किया है-

सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

[13] वहीं, पृ. 210
[14] वहीं, पृ. 211

राष्ट्रीयता और देश प्रेम से भरी हुई उनकी सुप्रसिद्ध कविता 'हिमालय' में भारत के गौरवमय अतीत का चित्रण है। इसमें भारत को पुण्यभूमि कहा गया है, जिसका भाल हिमालय है। हिमालय तो भारत माता का किरीट है। नवयुग की शंखध्वनि उसे जगा रही है। अब उसके मौन और तप त्यागने का समय आ गया है।

बोध प्रश्न - 8

1. 'युग-चारण' और 'काल के चारण' किसकी संज्ञाएँ हैं ?
2. अपनी किस रचना में रामधारी सिंह 'दिनकर ने स्वराज्य प्राप्ति के हर्ष और आम जनजीवन में व्याप्त असंतोष का चित्रण किया है ?
3. अपनी किस रचना में रामधारी सिंह 'दिनकर ने नर-नारी की प्रेम समस्या पर गहराई से विचार किया है ?

अभ्यास प्रश्न - 2

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' के राष्ट्रीय विचारों को अपने शब्दों में लिखें।

   .....

   .....

   .....

   .....

15.10 सारांश

प्रिय अध्येताओं ! इस इकाई में हमने देखा कि किस प्रकार आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य राष्ट्रीय विचारों से परिपूर्ण है। विविध भारतीय कवियों ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक गौरव, और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण जैसे विषयों को बखूबी उजागर किया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य न केवल प्रेरणादायक है, अपितु राष्ट्रीय पहचान और एकता को मजबूत करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

15.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई. से 1947 ई. तक), डॉ. ए. के. मित्तल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020
- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरि नारायण दीक्षित, देववाणी परिषद्, नई दिल्ली, 1983
- राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, रामधारी सिंह 'दिनकर', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1957.
- राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2019.
- राजनैतिक सिद्धान्त और शासन, डॉ. कृष्णकान्त मिश्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. अनूपचन्द कपूर, प्रीमियर पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967.

● राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 1966.

15.12 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1 के उत्तर

1. 23 मार्च, 1874 को
2. भारतेन्दु ने

बोध प्रश्न - 2 के उत्तर

1. महात्मा गाँधी ने
2. "यशोधरा" और "नहुष" में

बोध प्रश्न - 3 के उत्तर

1. कामायनी में
2. 'आंसू' और 'अनुपमा' में

बोध प्रश्न - 4 के उत्तर

1. 'प्रभा' और 'कर्मवीर' के
2. 'हिमकिरीटिनी' से

बोध प्रश्न - 5 के उत्तर

1. कवयित्री महादेवी वर्मा के शब्दों में
2. 'जन्मभूमि मेरी जगन्महारानी'

बोध प्रश्न - 6 के उत्तर

1. सन् 1970 में
2. 'विप्लव' का

बोध प्रश्न - 7 के उत्तर

1. 'बिखरे मोती'
2. 1934 में

अभ्यास प्रश्न - 1 का उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 8 के उत्तर

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की
2. 'धूप और धुआँ' में
3. 'उर्वशी' में

अभ्यास प्रश्न - 1 का उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।